फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 74 संख्याः 16 प्रभात जयपुर, गुरुवार 17 अगस्त, 2023 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 3.50 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

The Stars have finally Aligned for India's Satellite Launch Industry

The stars started to align when the country's Department of Space released a draft of its New Spacecom Policy.

Tips For Skin Protection!

Sunny days brings hot weather and outdoor fun—but also potential damage to our skin.

ऑस्ट्रेलिअन एल्प्स में, बाहर से लाए गए जंगली घोड़े ऐसा खतरा बनते जा रहे हैं जिससे ऑस्ट्रेलिया की कई संकटग्रस्त प्रजातियाँ विलुप्त हो सकती हैं। बड़े आकार और मजबूत खुर वाले ये जानवर ऐसे पर्यावरण में अपना कब्जा जमाए हुए हैं जो इनके जैसी प्रजातियों के बिना विकसित हुआ है। थ्रैटैन्ड स्पीशीज़ साइन्टिफिक कमेटी (टी.एस.एस.सी.) ने इस देश की सरकार से अपील की है कि, इन घोड़ों के कारण यहाँ के संवेदनशील एल्पाइन इकोसिस्टम को जो क्षति हुई है उस पर ध्यान दिया जाए और तुरंत कार्यवाही की जाए। कमेटी का कहना है कि, ये जंगली घोड़े ऑस्ट्रेलिया के गंभीर रुप से संकटग्रस्त, कम से कम छः जानवरों और कम से कम दो गंभीर रुप से संकटग्रस्त पौधों की विलुप्ति का कारण हो सकते हैं। घोड़ों द्वारा चराई के कारण यहाँ के कई देशी पौधे संकटग्रस्त हैं। इसके अलावा ये वनस्पति और जलस्रोतों को कुचलकर नष्ट कर रहे हैं। कमेटी के अनुसार तीन तरह के मेंढक, चार तरह की मछलियाँ, चार रैप्टाइल और एक स्तनपायी जानवर इन घोड़ों के कारण खतरे में हैं, जिनमें से छः गंभीर रुप से संकटग्रस्त हैं। कमेटी के सदस्य, प्रोफेसर क्रिस जॉनसन ने कहा, "ये घोड़े यहाँ के हैबिटैट को इस तरह से बिगाड़ रहे हैं कि, कुछ प्रजातियों की संपूर्ण आबादी खतरे में है।" गंभीर रुप से संकटग्रस्त प्रजातियों में एक है, नई खोजी गईं छोटी मछलियाँ, स्टॉकी गैलैक्सीज़। एक और प्रजाति है, ब्रॉड टूद्ड रैट, जो कि जंगली घोड़ों के प्रभाव के कारण "अतिसंवेदनशील" से अब "संकटग्रस्त" वर्ग में आ गया है। सरकारी सर्वे भी बताते हैं कि जंगली घोड़ों की संख्या बढ़ती जा रही है।

ममता बनर्जी ने भावी प्रधानमंत्री के रूप में स्वयं का नाम चलाया

तृणमूल कांग्रेस के कार्यक्रमों में वे अपने समर्थकों से खुद को भावी प्रधानमंत्री कहलवा रही हैं

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 अगस्त। आशा हमेशा मनुष्य के दिमाग में रहती है और अब वह ममता बनर्जी और उनकी पार्टी के कुछ नेताओं में जगी है।

तृणमूल कांग्रेस के एक सम्मेलन में पार्टी के सदस्यों ने ममता बनर्जी को भारत की अगली प्रधानमंत्री कहना शुरु कर दिया है। पार्टी के एक प्रवक्ता ने आम जनता को चुनौती दी है कि प्रधानमंत्री के लिए कोई ज्यादा उपयुक्त व्यक्ति हो तो बताएं।

तृणमूल के एक अन्य नेता ने दावा किया है कि बंगाल के लोग एक स्वर में ममता बनर्जी को भारत की अगली प्रधानमंत्री मान रहे हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि अभी यह पूरी प्रक्रिया कितने कदम दूर है।

कोलकाता में जगह-जगह पोस्टर लगने लग गए हैं जिनमें ममता बनर्जी को प्रधानमंत्री दिखाया गया है।

ममता बनर्जी एक चतुर राजनेता हैं और उन्हें यह समझने में देर नहीं लगी कि कर्नाटक चुनाव जीत के बाद राहुल गांधी के कांग्रस के नए नेता के रूप में उभरने के बाद उनके लिए कोई मौका नहीं है।

- **कोलकाता में जगह-जगह ममता बनर्जी को भावी प्रधानमंत्री बताने वाले पोस्टर भी नज़र आने लगे हैं।**
- **असल में राहुल गांधी के निरंतर बढ़ते कद से ममता बनर्जी असुरक्षित महसूस करने लगी हैं विपक्षी गठबंधन "इंडिया" से भावी प्रधानमंत्री के रूप में सबसे पहले राहुल गांधी का ही नाम आता है और ममता बनर्जी का नाम तो नीतीश कुमार से भी काफी बाद में आता है।**

राष्ट्रीय स्तर पर जब इंडिया गठबंधन की बात होती है तो पहला नाम और चेहरा राहुल गांधी का होता है। ममता बनर्जी का नाम बहुत नीचे, बचे-खुचे नामों के साथ आता है। विपक्षी गठबंधन की सूची में ममता का नाम बिहार के नीतीश कुमार से काफी नीचे आता है। ममता बनर्जी एक दिन देश की प्रधानमंत्री बनने की आस लगाए बैठी हैं। उन्होंने पिछले आम चुनाव में भी अपना दावा पेश किया था जब उन्होंने विपक्षी खेमों के नेताओं में सर्वाधिक स्वीकार्य होने का दिखावा किया था।

विपक्षी इंडिया गठबंधन के सदस्यों ने ममता बनर्जी को ज्यादा तूल नहीं दिया है और वे इससे व्याकुल नज़र आती है। वे किसी से पीछे नहीं रह सकतीं।

ऐसे में अगले आम चुनाव में उनका दांव बहुत भारी है। उन्हें ज्यादा गंभीरता से नहीं लिया जा सकता क्योंकि बंगाल के बाहर उनकी कोई हैसियत नहीं है, मगर वे राज्य में सभी 40 सीटें जीतने का दावा कर रही है।

लेकिन दुर्भाग्य से वे संसद की सभी सीटें आसानी से जीतने के लिए आश्वस्त नहीं हैं। राज्य की विपक्षी पार्टियां अपत्यक्ष रूप से ममता बनर्जी का हराने के लिए अपनी गतिविधियों का समन्वय कर रही है।

इसका कारण यह है कि बंगाल में विपक्षी दलों का तृणमूल कांग्रेस के साथ अनुभव कटु रहा है। तृणमूल के विपक्षी पार्टियों के साथ दुर्व्यवहार किया है जिससे उनकी पार्टी अलग-थलग पड़ गई है।

दो प्रमुख राजनैतिक ताकतें दिल्ली में विधानसभा चुनावों की रणनीति बनाने में जुटीं

भाजपा की केन्द्रीय चुनाव समिति की बैठक में राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ व तेलंगाना पर चर्चा हुई

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 अगस्त। देश की दो राजनैतिक ताकतें राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश तथा तेलंगाना के हाल ही में होने वाले विधानसभा चुनावों के तात्कालिक एवं महत्वपूर्ण चुनौती का सामना करने के लिए अपनी-अपनी रणनीतियाँ तैयार कर रही हैं।

- **बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार इंडिया गठबंधन की मुम्बई में होने वाली बैठक के संदर्भ में केजरीवाल व अन्य नेताओं से चर्चा करने दिल्ली आए।**
- **सूत्रों का कहना है कि, इंडिया गठबंधन राजस्थान, मध्य प्रदेश, व छत्तीसगढ़ में भाजपा के सामने एक साझा प्रत्याशी उतारने की रणनीति पर भी विचार कर रहा है।**

भाजपा की सैन्ट्रल इलैक्शन कमेटी की मीटिंग आज शाम को होनी है जिसमें अन्य वरिष्ठ नेताओं के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं गृह मंत्री अमित शाह भी शामिल होंगे। मीटिंग में उक्त राज्यों के विधानसभा चुनावों, जिन्हें 2024 के लोकसभा चुनावों के पहले का सेमीफाइनल मैच माना जा रहा है, के लिए प्रचार की योजना पर चर्चा होगी।

एक दिन के लिये राष्ट्रीय राजधानी में आये बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल से भेंट करने से पहले, पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की पाँचवी बरसी के अवसर पर, उनके स्मारक पर श्रद्धांजलि दी। देर शाम को, नीतीश कुमार, जिन्होंने गैर-भाजपा दलों के गठबंधन के गठन के मामले में पहल की थी, विपक्षी गठबंधन इंडिया के अन्य नेताओं से मिलेंगे। ऐसी संभावना है कि 31 अगस्त एवं 1 सितम्बर को मुम्बई में होने वाली इंडिया की तीसरी मीटिंग में, गठबंधन पार्टनर एक समन्वय समिति का गठन एवं एक संयोजक की नियुक्ति कर दी जाएगी। लेकिन सूत्रों ने कहा कि संयोजक की भूमिका के लिये कुमार के नाम पर मतैक्य नहीं है। सूत्रों ने कहा कि यह भी संभव है कि कई क्षेत्रीय समन्वयक (रीजनल को-ऑर्डिनेटर) बना दिये जायें तथा उन्हें भौगोलिक दृष्टि से अलग-अलग क्षेत्रों का विशिष्ट प्रभार दे दिया जाये, जैसे पूर्व के लिये ममता बनर्जी, बिहार एवं उत्तर प्रदेश के लिये नीतीश कुमार तथा इसी प्रकार अन्य क्षेत्रीय समन्वयकों की नियुक्ति कर दी जाये।

ऐसी संभावना है कि इस दिल्ली-यात्रा के दौरान, "इंडिया" के नेताओं के साथ होने वाली उनकी मीटिंगों में, कुमार आगामी विधानसभा चुनावों में भाजपा प्रत्याशी के खिलाफ विपक्ष का एक ही उम्मीदवार खड़ा किये जाने की योजना पर जोर दें। सूत्रों ने कहा, "राज्यों के विधानसभा चुनावों में इस विचार को पूरी तरह लागू करना मुश्किल होगा क्योंकि राज्यों में कई दल एवं उनके उम्मीदवार अपनी दावेदारी प्रस्तुत करना चाहेंगे, लेकिन इन चुनावों में इस विचार

(शेष पृष्ठ 4 पर)

क्या आपको कम सुनाई देता है।
ऑटोमेटिक
कान की मशीनें
स्पीच थैरेपी
कॉकलियर इम्पलांट, ऑटिजम
डिले स्पीच, हकलाना, तुतलाना
PERFECT SPEECH AND HEARING SOLUTIONS
Tonk Road, JAIPUR | Vaishali Nagar, JAIPUR
सम्पर्क- 94602 07080

दक्षिण भारत में आंध्र में ही कुछ उम्मीद बची है भाजपा के लिए

तेलुगु देशम और पवन कल्याण की पार्टी के साथ मिलकर भाजपा आंध्र में सत्तारूढ़ होने की कोशिश कर रही है

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 अगस्त। दक्षिण भारत में जो मुद्दे चल रहे हैं और जमीनी स्तर पर जो संकेत मिल रहे हैं उनसे ऐसा लगता है कि 2024 के आम चुनाव में भाजपा के लिए मुश्किलें बढ़ सकती है।

5 में से चार राज्यों में तो भाजपा 2024 के आम चुनाव में हाशिए पर रह सकती है। ये चार राज्य हैं, तमिलनाडू, केरल, कर्नाटक और तेलंगाना।

सबसे कड़ा मुकाबला केरल में है, जहां मोर्चा सरकार ने एन.सी.ई.आर.टी. के गुजरात दंगों, महात्मा गांधी के हत्या से संबंधित अध्याय पढ़ाने का निर्णय लिया है जबकि केन्द्र सरकार ने ये सभी अध्याय हटा दिए हैं। केरल की वाम मोर्चा सरकार ने केन्द्र सरकार के इस फैसले को शिक्षा के भगवाकरण की संज्ञा दी और वह इससे संघर्ष करने पर आमादा है। केरल का शिक्षा विभाग स्कूल की किताबों को पुनः छपवाएगा और उससे गुजरात दंगे और महात्मा गांधी के अध्याय पुनः जोड़ेगा।

संयोगवश यह मुद्दा केरल में जोर पकड़ रहा है, जो कि देश का सर्वाधिक साक्षर राज्य है और जिसने भाजपा और संघ परिवार द्वारा अपना दबदबा बढ़ाने के उपायों के सामने मजबूत अवरोध खड़ा किया है। अभी तक भी भाजपा केरल से एक भी सीट नहीं जीत पाई है। और राजनैतिक विश्लेषकों के अनुसार 2024 के लोकसभा चुनावों में भी ऐसी कोई उम्मीद नहीं। यहां चुनाव माकपा नीत वाम मोर्चा और कांग्रेस के बीच ही लड़ा जाएगा, जो 20 सीटों पर मित्रता पूर्ण संघर्ष करेगी क्योंकि दोनों ही दल

(शेष पृष्ठ 4 पर)

- **लेकिन तेलंगाना, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में भाजपा की कहीं कोई पूछ नहीं है।**
- **सबसे बुरी हालत तेलंगाना में है, जहां सत्तारूढ़ पार्टी बी.आर.एस. का साथ भी भाजपा को बिखरने से नहीं रोक पा रहा है। भाजपा के नेता कांग्रेस में शामिल हो रहे हैं।**
- **कर्नाटक की जीत से उत्साहित कांग्रेस ने तेलंगाना की जिम्मवारी डी.के. शिवकुमार को सौंपी है, जो तेलंगाना में पार्टी की चुनावी रणनीति तैयार करेंगे।**
- **केरल व तमिलनाडु में द्रमुक और वाम मोर्चा ने भाजपा को जबर्दस्त टक्कर दी है, यहां भाजपा का ज्यादा प्रभाव भी नहीं है।**

सुप्रीम कोर्ट में देह व्यापार, वैश्या जैसे शब्द प्रतिबंधित

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 अगस्त। सुप्रीम कोर्ट ने अपने जजों को अनजाने में आम उपयोग के शब्द काम में लेकर लैंगिक पूर्वाग्रह बढ़ाने के खिलाफ संवदनशील बनाने के लिए एक नवीनतम हैंडबुक जारी की है उसमें "प्रॉस्टीट्यूट, हुकर, होर, कीप, मिस्ट्रेस, स्लट (महिलाओं के लिए प्रयुक्त होने वाले अपमानजनक शब्द) जैसे करीब 40 शब्दों पर रोक लगा दी है।

- **सुप्रीम कोर्ट ने नई हैंड बुक जारी की है जिसमें महिलाओं से संबंधित 40 शब्दों पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया है। इनमें हाउस वाइफ शब्द भी शामिल है। इसके स्थान पर अब होम मेकर शब्द प्रयुक्त होगा।**

यह हैंडबुक न्यायपालिका में लैगिंक संवेदनशीलता को बढ़ावा देने की दिशा में बड़ा ही नहीं बल्कि क्रांतिकारी कदम है जो कोर्ट के आदेशों और विधिक दस्तावेजों में प्रचलित रूढ़िबद्ध भाषा से मुक्ति दिलवाने में

(शेष पृष्ठ 4 पर)

कोटा में एक और कोचिंग छात्र ने आत्महत्या की

कोटा, 16 अगस्त (निसं)। कोटा में एक और कोचिंग छात्र की आत्महत्या की खबर सामने आई है। छात्र बीते दो साल से कोटा में रहकर इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहा था। मृतक छात्र मूलतः बिहार का निवासी था। बीते आठ माह में यह बाइसवीं आत्महत्या है। इसकी सूचना मिलने पर पुलिस मृतक छात्र के पीजी पर पहुंची। पुलिस ने उसके शव को

- **गत 8 महीनों में 22 छात्र आत्महत्या कर चुके हैं।**

पीजी से नया अस्पताल की मोर्चरी में शिफ्ट करवा दिया। इसके साथ ही परिजनों को इसकी सूचना दे दी है।

छात्र के रूम में किसी तरह का कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। ऐसे में आत्महत्या के कारणों का खुलासा नहीं हुआ है। महावीर नगर थाना अधिकारी

(शेष पृष्ठ 4 पर)

चंद्रयान चंद्रमा के एक दम करीब पहुँचा

चेन्नई, 16 अगस्त (वार्ता)। भारत का तीसरे चंद्रमा मिशन चंद्रयान-3 बुधवार सुबह चौथा चरण पार कर अपनी मंजिल के और करीब पहुंच गया। चंद्रयान

- **चौथा चरण पार करके लैण्डर मॉड्यूल (एल. एम.) 17 अगस्त को (आज) प्रोपल्शन मॉड्यूल (पी.एम.) से अलग होगा।**

के लिए यह प्रक्रिया काफी अहम थी और कल (17 अगस्त को) चन्द्रयान-3 लैंडर मॉड्यूल (एलएम) को प्रोपल्शन मॉड्यूल (पीएम) से अलग होगा।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन

(शेष पृष्ठ 4 पर)

देश के बड़े अखबारों ने स्वतंत्रता दिवस पर प्र.मंत्री मोदी के भाषण की आलोचना की

सभी का मत था कि, मोदी का भाषण पूर्णतया राजनैतिक था, जिसका लक्ष्य 2024 के आम चुनाव थे

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 अगस्त। हर तरफ मोदी ही थे। प्रधानमंत्री ने लाल किले की प्राचीर से दिए स्वाधीनता दिवस भाषण को विशेषज्ञों ने राजनैतिक भाषण की संज्ञा दी जिसमें 2024 के चुनावी मुद्दों को उठाया गया, ये हैं "भ्रष्टाचार, वंशवादी राजनीति और तुष्टिकरण।"

प्रधानमंत्री ने विपक्ष को मात देने के लिए इन विषयों को चुना। उनका फोकस स्पष्टतः अगले एक साल पर था जिसमें वे तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के लिए वाट प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।

क्या ऐसा राजनीति से प्रेरित भाषण ऐसे समय में देना उचित था जब सरकार के सामने इतनी सारी सामाजिक और आर्थिक चुनौतियां हैं? क्या प्रधानमंत्री हरियाणा में संप्रदायिक आग की अनदेखी कर सकते हैं? क्या व कह सकते हैं कि मणिपुर में सब कुछ सही है? कतई नहीं।

देश भी गरीबी, अभाव, असमानता और निराशा से मुक्त नहीं है। लोगों की स्वतंत्रता एवं अधिकार तथा इनका संरक्षण करने वाली संस्थाएं लगातार दबाव में हैं।

अधिकांश अखबारों ने संपादकीय में कहा है कि मोदी का भाषण आत्मप्रशंसा से भरा था और देश की सारी प्रगति का श्रेय वे स्वयं ले रहे थे।

मोदी ने अपने 10वें स्वाधीनता दिवस भाषण में देश के बारे में अपनी दृष्टि बताई और देश के अगले 5 साल, 25 साल और 1000 साल तक की भी बात की, जैसे कि उनके निर्णयों का प्रभाव तब तक रहेगा। लेकिन उन्होंने बहुत लंबी अवधि की जो बात की उसे समझदारी नहीं कहा जा सकता, विशेषकर त्वरित परिवर्तनों के दौर में। उनके भाषण के विषय और विचारों से लगता है वे असल में अगले एक साल की बात कर रहे है जब वे तीसरे कार्यकाल के लिए चुनाव में जाएंगे।

दक्षिण भारत के अखबार डेक्कन हैराल्ड का कहना है, "राजनीति से प्रेरित भाषण

(शेष पृष्ठ 4 पर)

- **डैकन हैरल्ड लिखता है, राजनीति व चुनाव से प्रेरित भाषण स्वतंत्रता दिवस के लिए सर्वथा अनुपयुक्त था। भाषण में उन्होंने देश की प्रगति का पूरा श्रेय खुद को दिया। पूरे भाषण में मोदी की गारंटी, मोदी का संघर्ष ही बताया गया। भाषण नारेबाजी व अतिशयोक्ति से भरा हुआ था।**
- **ट्रिब्यून लिखता है, सरकार कहती है कि, भारत जी-20 की अध्यक्षता कर रहा है और उसकी दी हुई थीम, "एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य", को भारी समर्थन मिला है, पर क्या भारत में ऐसी ही थीम "एक भारत, एक परिवार, एक भविष्य" प्रतिध्वनित होती है, शायद नहीं, खासकर मणिपुर में तीन माह से चल रही हिंसा व हरियाणा के साम्प्रदायिक दंगों को देखते हुए।**
- **कुछ अखबारों ने सवाल उठाए हैं कि, वैश्विक ताकत और विकसित राष्ट्र बनने के रास्ते पर अग्रसर भारत क्या मणिपुर हिंसा, बढ़ते सांप्रदायिक तनाव जैसे मुद्दों को अनसुलझा छोड़ सकता है?**

अब, आ गया है
नया
कायम चूर्ण
एडवांस
गुलाबपत्ती, एरंडतेल के गुणो के साथ

दानेदार स्वरूप में अधिक दमदार, अधिक असरदार
कब्ज़, एसिडिटी, गैस में संपूर्ण राहत